प्रारंभिक परीक्षा

AIM-260 जॉइंट एडवांस्ड टैक्टिकल मिसाइल

संदर्भ

खबरों के अनुसार, ऑस्ट्रेलिया अमेरिका द्वारा विकसित की जा रही अगली पीढ़ी की लंबी दूरी की हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइल, AIM-260 जॉइंट एडवांस्ड टैक्टिकल मिसाइल (JATM) का पहला अंतरराष्ट्रीय खरीदार बनने वाला है।

AIM-260 जॉइंट एडवांस्ड टैक्टिकल मिसाइल के बारे में

- **प्रकृति:** AIM-260 JATM एक अगली पीढ़ी की बियॉन्ड-विजुअल-रेंज एयर-टू-एयर मिसाइल (BVRAAM) है जिसे मुख्य रूप से उन्नत लड़ाकू विमानों और उच्च-मूल्य वाले हवाई लक्ष्यों के लंबी दूरी के अवरोधन (interception) के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- **विकासकर्ता:** इसे एक अति-गुप्त विशेष पहुँच कार्यक्रम (Special Access Program) के तहत अमेरिकी वायु सेना के लिए लॉकहीड मार्टिन द्वारा विकसित किया जा रहा है।
- **उद्देश्य:** इस मिसाइल का उद्देश्य अमेरिका को परिष्कृत और अत्यधिक कुशल (highly manoeuvrable) हवाई लक्ष्यों के विरुद्ध उन्नत लंबी दूरी की हवाई-युद्ध क्षमता प्रदान करना है।
- **प्रणोदन और गति:** इसमें डुअल-पल्स या उन्नत ठोस-रॉकेट प्रणोदन का उपयोग किए जाने की संभावना है, जिसकी अनुमानित गति मैक 4 से अधिक है।
- **रेंज:** इसकी प्रभावी मारक क्षमता कम से कम 200 किमी होने का अनुमान है, जो लड़ाकू विमानों के एंगेजमेंट एनवलप (हमले के दायरे) को महत्वपूर्ण रूप से विस्तारित करती है।

एवरेस्ट इंजन(EVEREST ENGINE)

संदर्भ

एस्ट्रोबेस स्पेस टेक्नोलॉजीज ने हाल ही में एवरेस्ट, एक 800 kN फुल-फ्लो स्टेज्ड कंबशन (FFSC) रॉकेट इंजन का अनावरण किया, जिसका उद्देश्य भारत के निजी अंतरिक्ष क्षेत्र को पुन: प्रयोज्य (reusable), उच्च-आवृत्ति वाले प्रक्षेपण यान विकसित करने में सहायता करना है।

एवरेस्ट इंजन के बारे में

- **प्रकृति:** एवरेस्ट एक 800 kN फुल-फ्लो स्टेज्ड कंबशन (FFSC) रॉकेट इंजन है जिसे पुन: प्रयोज्य मध्यम-लिफ्ट प्रक्षेपण यानों के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- **विकासकर्ता:** बेंगलुरु स्थित एक भारतीय अंतरिक्ष-तकनीक स्टार्टअप, एस्ट्रोबेस स्पेस टेक्नोलॉजीज द्वारा विकसित, इसे भारत का पहला निजी तौर पर विकसित उच्च-थ्रस्ट वाला FFSC इंजन बताया गया है।

- **प्रणोदक:** यह अपने प्रणोदक संयोजन के रूप में तरल ऑक्सीजन (LOX) और तरल मीथेन (LCH_4), जिसे सामान्यतः मेथालॉक्स (methalox) कहा जाता है, का उपयोग करता है।
- **थ्रस्ट और अनुप्रयोग:** यह लगभग 800 kN का निर्वात थ्रस्ट (vacuum thrust) उत्पन्न करता है और इसे पुन: प्रयोज्य प्रक्षेपण यानों के लिए सटीक नियंत्रण, तीव्र टर्नअराउंड और उन्नत प्रक्षेपण अर्थशास्त्र को सक्षम करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- **फुल-फ्लो कंबशन (पूर्ण-प्रवाह दहन):** ईंधन और ऑक्सीडाइज़र दोनों को उनके संबंधित टर्बोपंप चलाने के लिए अलग-अलग प्री-बर्नर में आंशिक रूप से जलाया जाता है; इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न प्रवाह को मुख्य दहन कक्ष में निर्देशित किया जाता है, जिससे अत्यधिक उच्च दबाव पर कुशल संचालन संभव होता है।
- **प्रणोदन लाभ:** FFSC वास्तुकला (architecture) कुछ घटकों पर तापीय (thermal) और यांत्रिक (mechanical) तनाव को कम करके इंजन की दक्षता और घटकों के स्थायित्व में सुधार कर सकती है।

विश्व जनजातीय दिवस(WORLD TRIBAL DAY) 2026

संदर्भ

विश्व के स्वदेशी लोगों के अंतर्राष्ट्रीय दिवस, जिसे विश्व जनजातीय दिवस के रूप में भी जाना जाता है, की पूर्व संध्या पर, वेल्लालर कॉलेज फॉर विमेन, इरोड, तमिलनाडु में स्वदेशी विरासत को उजागर करने वाले दो दिवसीय सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन किया गया।

विश्व जनजातीय दिवस के बारे में

- **विश्व जनजातीय दिवस,** जिसे आधिकारिक तौर पर विश्व के स्वदेशी लोगों के अंतर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में जाना जाता है, स्वदेशी लोगों के अधिकारों, संस्कृतियों और कल्याण के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने और उनकी रक्षा करने के लिए प्रतिवर्ष **9 अगस्त** को मनाया जाता है।
- **ऐतिहासिक महत्व:** यह तिथि मानवाधिकारों के संवर्धन और संरक्षण पर उप-आयोग के तहत 1982 में जिनेवा में आयोजित स्वदेशी आबादी पर संयुक्त राष्ट्र कार्य समूह की पहली बैठक का स्मरण कराती है।
- **विषय 2026:** "स्वदेशी दाइयों का सम्मान: जीवन और कल्याण की रक्षा" (Honouring Indigenous Midwives: Safeguarding Life and Well-being), जो पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करने और सामुदायिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में स्वदेशी दाइयों की भूमिका को रेखांकित करता है।

महत्वपूर्ण तथ्य

- **आबादी और गरीबी:** वैश्विक आबादी में स्वदेशी लोगों का हिस्सा 6% से भी कम है, लेकिन विश्व के अत्यधिक गरीबों में इनकी संख्या कम से कम 15% है।
- **भूमि और जैव विविधता:** वे पृथ्वी की सतह के लगभग 28% हिस्से की रक्षा करते हैं, जिसमें 11% वैश्विक वन शामिल हैं, और स्वदेशी क्षेत्रों में दुनिया की शेष बची हुई अधिकांश जैव विविधता मौजूद है।

- **खाद्य प्रणालियाँ:** स्वदेशी समुदाय अत्यधिक आत्मनिर्भर खाद्य प्रणालियाँ बनाए रखते हैं, जो अपने स्वयं के भोजन और संसाधनों का लगभग 50–80% उत्पादन करते हैं।

स्लेंडर-बिल्ड वल्चर (पतली चोंच वाला गिद्ध)

संदर्भ

हाल ही में, असम में बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (BNHS) के संरक्षण केंद्र से कैप्टिव-ब्रीड (बंधक-प्रजनित) किए गए पांच पतली चोंच वाले गिद्धों को जंगल में छोड़ा गया।

स्लेंडर-बिल्ड वल्चर के बारे में

- **आवास:** यह आर्द्रभूमि, जंगली क्षेत्रों और खुले ग्रामीण इलाकों में पाया जाता है, जो सामान्यतः घनी आबादी वाली मानव बस्तियों से दूर होते हैं।
- **वितरण:** यह भारत के गंगा के मैदानी इलाकों, असम और आस-पास के क्षेत्रों, तथा बांग्लादेश, नेपाल, म्यांमार और कंबोडिया के कुछ हिस्सों में पाया जाता है।
- **पहचान:** इसकी पहचान एक लंबी, पतली गर्दन, हल्के रंग के निचले हिस्सों और गहरी, संकरी चोंच से होती है; यह एक मजबूत ग्लाइडर (उड़ान भरने वाला पक्षी) है जो भोजन की तलाश में लंबी उड़ानें भरता है।
- **आहार:** यह एक अपमार्जक (scavenger) है जो मुख्य रूप से सड़े-गले मांस (carrion) पर भोजन करता है, और अक्सर जानवरों के शवों के आसपास इकट्ठा होता है।
- **आबादी में गिरावट:** इनकी आबादी में भारी गिरावट का मुख्य कारण मवेशियों के शवों के माध्यम से डिक्लोफेनाक और अन्य NSAID (नॉन-स्टेरायडल एंटी-इंफ्लेमेटरी ड्रग्स) का संपर्क है, जिन्हें मरने से पहले इन दवाओं से उपचारित किया गया था।
- **संरक्षण स्थिति:**
    - **IUCN रेड लिस्ट:** गंभीर रूप से लुप्तप्राय (Critically Endangered)
    - **वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972:** अनुसूची I

धनसिरी नदी

संदर्भ

असम राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (ASDMA) ने हाल ही में राज्य में जारी बाढ़ की स्थिति के बीच गोलाघाट जिले में धनसिरी नदी के पास रहने वाले निवासियों के लिए एक सार्वजनिक परामर्श जारी किया।

धनसिरी नदी के बारे में

- **प्रकृति:** धनसिरी नगालैंड और असम से होकर बहने वाली एक सीमा-पार नदी है और यह ब्रह्मपुत्र नदी की एक महत्वपूर्ण सहायक नदी है।

- **उद्गम:** यह नगालैंड में लाईसांग चोटी से निकलती है।
- **प्रवाह मार्ग:** अपने उद्गम से, यह शुरू में उत्तर-पश्चिम की ओर, फिर दीमापुर की ओर उत्तर-पूर्व में बहती है, उसके बाद सामान्यतः गोलाघाट की ओर उत्तर की दिशा में मुड़ जाती है और अंततः धनसिरीमुख, असम में ब्रह्मपुत्र से मिलने के लिए उत्तर-पश्चिम की ओर बहती है।
- **सहायक नदियाँ:** इसकी प्रमुख सहायक नदियों में इतांकी, बरा मोंग्लू, लंगलोंग नदी और अमालुमा जान नदियाँ शामिल हैं।
- **पारिस्थितिक परिवेश:** यह नदी नगालैंड-असम सीमा को पार करती है, जिसके एक तरफ धनसिरी आरक्षित वन और दूसरी तरफ इटांकी राष्ट्रीय उद्यान स्थित है, जो समृद्ध जैव विविधता का समर्थन करता है।

डेल्फ़्ट द्वीप(DELFT ISLAND)

संदर्भ

श्रीलंकाई नौसेना ने हाल ही में डेल्फ्ट द्वीप के पास 11 भारतीय मछुआरों को बचाया, जब उनका ट्रॉलर जमीन पर फंस गया था।

डेल्फ़्ट द्वीप के बारे में

- **अवस्थिति:** नेदुनतीवू के नाम से भी जाना जाने वाला डेल्फ्ट द्वीप, जाफना प्रायद्वीप के दक्षिण-पश्चिम में, श्रीलंका के उत्तरी तट पर पाक जलडमरूमध्य (Palk Strait) में स्थित है।
- **भूगोल:** लगभग 50 वर्ग किमी में फैला, यह इस क्षेत्र के सात बसे हुए द्वीपों में सबसे बड़ा है।
- **जल विज्ञान:** इस द्वीप में कोई जलधाराएँ नहीं हैं; मीठा पानी मुख्य रूप से प्राकृतिक गड्ढों और कृत्रिम तालाबों में एकत्र सतही जल से प्राप्त होता है।
- **परिदृश्य और वनस्पति:** यह द्वीप समतल, अंडाकार और हवाओं से प्रभावित है, जो उथले पानी और मुख्य रूप से प्रवाल (coral) के टुकड़ों तथा रेत से बने समुद्र तटों से घिरा हुआ है; वनस्पतियों में शुष्क झाड़ियाँ, अर्ध-शुष्क उष्णकटिबंधीय पौधे और लंबे ताड़ के पेड़ शामिल हैं।
- **इतिहास और विरासत:** मुख्य रूप से तमिल मूल के लोगों द्वारा आबाद इस द्वीप पर चोल वंश, पुर्तगालियों, डचों और अंग्रेजों के ऐतिहासिक प्रभाव देखने को मिलते हैं; उल्लेखनीय अवशेषों में प्राचीन मंदिरों के खंडहर और एक डच औपनिवेशिक किला शामिल है।

भारत छोड़ो आंदोलन

संदर्भ

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ 1942 में शुरू किए गए जन-राष्ट्रवादी संघर्ष को याद करते हुए, हाल ही में संसद में भारत छोड़ो आंदोलन की 84वीं वर्षगांठ मनाई गई।

भारत छोड़ो आंदोलन के बारे में

- **प्रकृति:** भारत छोड़ो आंदोलन, जिसे भारत छोड़ो आंदोलन या अगस्त क्रांति के रूप में भी जाना जाता है, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) द्वारा शुरू किया गया एक जन सविनय अवज्ञा आंदोलन था, जिसमें भारत से ब्रिटिश शासन को तत्काल वापस लेने की मांग की गई थी।
- **आरंभ:** यह आंदोलन औपचारिक रूप से 8 अगस्त 1942 को गोवालिया टैंक मैदान, बॉम्बे (अब अगस्त क्रांति मैदान, मुंबई) में महात्मा गांधी के "करो या मरो" के आह्वान के साथ शुरू किया गया था।
- **कांग्रेस का प्रस्ताव:** जुलाई 1942 में वर्धा में कांग्रेस कार्य समिति ने भारत छोड़ो प्रस्ताव तैयार किया, जिसे औपचारिक रूप से 8 अगस्त 1942 को बॉम्बे में AICC द्वारा अनुमोदित किया गया था।
- **नेताओं की गिरफ़्तारी:** ब्रिटिश अधिकारियों ने 9 अगस्त 1942 की तड़के गांधी, नेहरू, पटेल, आज़ाद और अन्य कांग्रेस नेताओं को गिरफ़्तार कर लिया, जिससे नेतृत्व का शून्य पैदा हो गया और एक स्वतःस्फूर्त जन विद्रोह भड़क उठा।
- **समानांतर सरकारें:** राष्ट्रवादियों ने कई क्षेत्रों में प्रति सरकार/समानांतर प्रशासन स्थापित किए— मिदनापुर (बंगाल) में तामलुक जातीय सरकार, नाना पाटिल के अधीन सतारा प्रति सरकार, और चित्तू पांडे के अधीन बलिया में समानांतर सरकार।
- **भूमिगत प्रतिरोध:** अरुणा आसफ अली ने गोवालिया टैंक मैदान में राष्ट्रीय ध्वज फहराया, जबकि उषा मेहता ने गुप्त कांग्रेस रेडियो का संचालन किया, जिसने खुले राजनीतिक गतिविधियों के दमन के बावजूद संचार को बनाए रखा।

परिणाम

- **औपनिवेशिक शासन में व्यवधान:** हड़तालों, रेलवे और टेलीग्राफ लाइनों की तोड़फोड़, और स्थानीय बहिष्कारों ने कई क्षेत्रों में ब्रिटिश प्रशासन के कामकाज को बाधित कर दिया।
- **राजनीतिक प्रभाव:** इस आंदोलन ने औपनिवेशिक शासन के प्रति जन-विरोध की गहराई को प्रदर्शित किया और ब्रिटिश सत्ता की दीर्घकालिक वैधता को कमजोर कर दिया।
- **स्वतंत्रता का मार्ग:** कठोर दमन के बावजूद, यह आंदोलन स्वतंत्रता संग्राम का एक निर्णायक चरण बन गया और 1947 में भारतीय स्वतंत्रता की दिशा में युद्धोत्तर संक्रमण में योगदान दिया।

राष्ट्रीय शहरी सहकारी वित्त और विकास निगम लिमिटेड (NUCFDC)

संदर्भ

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने हाल ही में मुंबई में राष्ट्रीय शहरी सहकारी वित्त और विकास निगम लिमिटेड (NUCFDC) के नए कार्यालय के साथ-साथ एक समर्पित साइबर सुरक्षा सुरक्षा संचालन केंद्र (SOC) का उद्घाटन किया।

राष्ट्रीय शहरी सहकारी वित्त और विकास निगम लिमिटेड (NUCFDC) के बारे में

- **प्रकृति:** NUCFDC एक RBI-पंजीकृत गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी (NBFC) है जो भारत के शहरी सहकारी बैंकिंग (UCB) क्षेत्र के लिए शीर्ष अम्ब्रेला संगठन (UO) के रूप में कार्य करती है, जो 1,400 से अधिक UCB और हजारों शाखाओं को एक साथ लाती है।

- **विकास:** इसकी स्थापना की सिफारिश विश्वनाथन, वी.एस. दास, मालेगाम और आर. गांधी समितियों सहित कई RBI विशेषज्ञ समितियों द्वारा की गई थी, जो राबोबैंक और क्रेडिट एग्रीकोल जैसे अंतरराष्ट्रीय सहकारी बैंकिंग मॉडल पर आधारित है।
- **शुभारंभ:** इसे औपचारिक रूप से 2 मार्च 2024 को नई दिल्ली में लॉन्च किया गया था; इसके नए मुंबई कार्यालय और साइबर सुरक्षा SOC का उद्घाटन अगस्त 2026 में किया गया।
- **क्षेत्र का आधुनिकीकरण:** विशेष रूप से छोटे सहकारी बैंकों के लिए डिजिटल अपनाने, तरलता समर्थन, क्षमता निर्माण, साइबर सुरक्षा और पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं (economies of scale) को बढ़ावा देकर UCB को मजबूत और आधुनिक बनाना।
- **डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर:** UCB के लिए कम लागत पर साझा कोर बैंकिंग सॉफ्टवेयर (CBS), डिजिटल बैंकिंग समाधान, ATM कनेक्टिविटी और साइबर सुरक्षा सेवाएँ प्रदान करता है।
- **तरलता समर्थन:** एक केंद्रीय तरलता प्रबंधक के रूप में कार्य करता है, जो अल्पकालिक तरलता सहायता प्रदान करता है और सदस्य UCB के बीच प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र ऋण (PSL) प्रमाणपत्र लेनदेन को सुविधाजनक बनाता है।
- **शासन और क्षमता निर्माण:** शासन में सुधार के लिए विनियामक अनुपालन उपकरण, बोर्ड प्रशिक्षण और पेशेवर क्षमता-निर्माण कार्यक्रम प्रदान करता है।
- **पैमाने की अर्थव्यवस्थाएँ:** सॉफ़्टवेयर, हार्डवेयर और वित्तीय सेवाओं की सामूहिक खरीद को सक्षम बनाता है, जिससे छोटे UCB के लिए परिचालन लागत कम हो जाती है।
- **SRO की संभावना:** निर्धारित ₹300 करोड़ की चुकता पूंजी सीमा प्राप्त करने के बाद इसे UCB के लिए एक स्व-नियामक संगठन (SRO) बनने की परिकल्पना की गई है।

मक्का संयुक्त निवारक समझौता (MECCA JOINT DETERRENCE AGREEMENT)

संदर्भ

तुर्किये, सऊदी अरब और पाकिस्तान ने हाल ही में क्षेत्रीय सुरक्षा को मजबूत करने के उद्देश्य से एक सामूहिक रक्षा और निवारक ढांचा स्थापित करने के लिए मक्का में 'मक्का संयुक्त निवारक समझौते' पर हस्ताक्षर किए।

मक्का संयुक्त निरोध समझौते के बारे में

- **प्रकृति:** यह एक त्रिपक्षीय रक्षा ढांचा है जो राष्ट्रीय संप्रभुता और क्षेत्रीय स्थिरता की रक्षा के लिए तुर्किये, सऊदी अरब और पाकिस्तान की सैन्य, तकनीकी, वित्तीय और रणनीतिक क्षमताओं को संयोजित करने का प्रयास करता है।
- **सदस्य:** तुर्किये रक्षा प्रौद्योगिकी और विनिर्माण क्षमताओं का योगदान देता है; सऊदी अरब वित्तीय ताकत, कूटनीतिक प्रभाव और ऊर्जा संसाधन लाता है; जबकि पाकिस्तान सैन्य जनशक्ति, युद्ध अनुभव और परमाणु निवारक क्षमताओं का योगदान देता है।

- **पृष्ठभूमि:** यह समझौता गाजा संघर्ष के बाद पश्चिम एशिया में बढ़ी अस्थिरता के बीच उभरा है, 2025 के सऊदी-पाकिस्तान पारस्परिक रक्षा समझौते और मौजूदा तुर्किये-पाकिस्तान रणनीतिक संबंधों पर आधारित है, और अधिक रणनीतिक स्वायत्तता की सदस्यों की खोज को दर्शाता है।
- **पारस्परिक रक्षा:** किसी एक सदस्य के खिलाफ सशस्त्र हमले को तीनों के खिलाफ आक्रामकता माना जाएगा, जो एक सामूहिक निवारक तंत्र का निर्माण करता है।
- **रक्षा-औद्योगिक सहयोग:** बाहरी हथियारों के आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भरता कम करने के लिए सऊदी वित्तीय संसाधनों के साथ तुर्किये की रक्षा प्रौद्योगिकी को मिलाकर संयुक्त सैन्य उत्पादन, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और स्थानीय विनिर्माण को बढ़ावा देता है।

अरुणाचल प्रदेश

संदर्भ

गृह मंत्रालय (MHA) और भारतीय सर्वेक्षण विभाग (Survey of India) ने हाल ही में राज्य में स्थानों को एकतरफा नाम देने के चीन के प्रयासों का मुकाबला करने के लिए अरुणाचल प्रदेश में 27 रणनीतिक स्थानों के नामों को मानकीकृत करने हेतु भारत के आधिकारिक मानचित्र को अपडेट किया है।

अरुणाचल प्रदेश के बारे में

- **भौगोलिक पहचान:** "डॉन-लिट माउंटेन की भूमि" (उगते सूर्य के पहाड़ों की भूमि) के रूप में जाना जाने वाला, अरुणाचल प्रदेश क्षेत्रफल के हिसाब से पूर्वोत्तर भारत का सबसे बड़ा राज्य है, जो पूर्वी हिमालय में स्थित है और भूटान, म्यांमार, तथा चीन/तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र के साथ अंतरराष्ट्रीय सीमाएँ साझा करता है।
- **पड़ोसी राज्य:** असम और नगालैंड
- **संवैधानिक विकास:** पूर्व में नॉर्थ-ईस्ट फ्रंटियर एजेंसी (NEFA), इसे 1972 तक विदेश मंत्रालय के तहत प्रशासित किया गया था, 1972 में यह एक केंद्र शासित प्रदेश बना, और 20 फरवरी 1987 को भारत के 24वें राज्य के रूप में पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त किया।
- **भू-भाग:** ऊबड़-खाबड़ हिमालयी पर्वतमालाओं, गहरी घाटियों और साम्भो सरोवर जैसी उच्च-ऊंचाई वाली झीलों की विशेषता; कांग्टो (7,090 मीटर) को इसकी सबसे ऊंची चोटी के रूप में पहचाना जाता है।
- **नदी प्रणालियाँ:** प्रमुख नदियों में सियांग (ब्रह्मपुत्र की मुख्य धारा), कामेंग, सुबनसिरी, दिबांग और लोहित शामिल हैं।
- **जनजातीय विविधता:** प्रमुख जनजातियों में न्यिशी, आदि, आपतानी, मोनपा, मिश्मी, टैगिन, तांगसा, वांचो और सिंगफो शामिल हैं; महत्वपूर्ण त्योहारों में लोसार, सोलंग, न्योकुम और द्री शामिल हैं।
- **राज्य के प्रतीक:** ग्रेट पाइड हॉर्नबिल – राज्य पक्षी; मिथुन/गयाल – राज्य पशु; होलोंग – राज्य वृक्ष; फॉक्सटेल ऑर्किड – राज्य पुष्प।
- **मैकमोहन रेखा:** ब्रिटिश भारत और तिब्बत के बीच की सीमा 1914 के शिमला सम्मेलन के दौरान खींची गई थी और इसे मैकमोहन रेखा के रूप में जाना जाता है।

मुख्य परीक्षा

भारत-बांग्लादेश संबंध

संदर्भ

बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना ने अपनी बेदखली के बाद भारत से अपनी पहली मीडिया बातचीत में, अपने खिलाफ चल रही कानूनी कार्यवाही के बावजूद बांग्लादेश लौटने के अपने इरादे को दोहराया। उनकी टिप्पणियों ने भारत-बांग्लादेश संबंधों में एक नया राजनीतिक तनाव ला दिया है, जिसमें ढाका ने पूर्व नेता को प्रदान किए गए मंच पर आपत्ति जताई है।

बांग्लादेश पूर्वोत्तर के लिए भारत की रणनीतिक चुनौती और लॉजिस्टिक गेटवे के रूप में एक साथ कैसे कार्य करता है?

- **भौगोलिक लाभ और रणनीतिक निर्भरता:** भारत की मुख्य भूमि और बंगाल की खाड़ी के बीच बांग्लादेश की अवस्थिति पूर्वोत्तर के लिए एक प्रमुख लॉजिस्टिक लाभ पैदा करती है, साथ ही स्थिर द्विपक्षीय संबंधों को रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण बनाती है।
    - **उदाहारण:** बांग्लादेश के माध्यम से अगरतला-चटगांव मार्ग केवल 200 किमी से अधिक है, जबकि कोलकाता के लिए सिलीगुड़ी कॉरिडोर के माध्यम से पारंपरिक मार्ग से लगभग 1,600-1,700 किमी लगता है, जो बांग्लादेश-आधारित कनेक्टिविटी के महत्वपूर्ण दूरी के लाभ को प्रदर्शित करता है।
- **पूर्वोत्तर के लिए मल्टीमॉडल गेटवे:** बांग्लादेश ऐसा बुनियादी ढांचा प्रदान करता है जिसके माध्यम से पूर्वोत्तर छोटे सड़क, रेल, अंतर्देशीय जलमार्ग और बंदरगाह मार्गों के माध्यम से क्षेत्रीय और समुद्री बाजारों तक पहुँच सकता है।
    - **उदाहारण:** 2023 में उद्घाटित अखौरा-अगरतला क्रॉस-बॉर्डर रेल लिंक, त्रिपुरा को बांग्लादेश के रेलवे नेटवर्क से जोड़ता है, जबकि चटगांव और मोंगला बंदरगाह समझौता पूर्वोत्तर और शेष भारत के बीच पारगमन कार्गो की सुविधा प्रदान करता है।
- **एक्ट ईस्ट का प्रवर्तक:** बांग्लादेश-आधारित कनेक्टिविटी पूर्वोत्तर को एक परिधीय सीमा क्षेत्र से बंगाल की खाड़ी और दक्षिण पूर्व एशियाई बाजारों के साथ भारत को जोड़ने वाले प्रवेश द्वार में बदल सकती है।
    - **उदाहारण:** BBIN मोटर वाहन समझौता बांग्लादेश, भूटान, भारत और नेपाल में यात्री और मालवाहक वाहनों की आवाजाही को सुविधाजनक बनाने के लिए एक संस्थागत ढांचा प्रदान करता है, जो उप-क्षेत्रीय कनेक्टिविटी का समर्थन करता है।
- **रणनीतिक भेद्यता:** बांग्लादेश-आधारित कनेक्टिविटी द्वारा सक्षम दक्षिण पूर्व एशियाई बाजार तक पहुंच भेद्यता भी पैदा करती है क्योंकि राजनीतिक या सुरक्षा घर्षण सीमा के बुनियादी ढांचे और पारगमन व्यवस्था को बाधित कर सकते हैं।
    - **उदाहारण:** 2024-25 में, बाड़ लगाने के कार्यों पर बांग्लादेश की सीमा गार्ड बांग्लादेश (BGB) की आपत्तियों ने भारत-बांग्लादेश सीमा बाड़ के व्यावहारिक हिस्सों को पूरा करने में देरी में योगदान दिया, जो दर्शाता है कि सीमा-प्रबंधन की असहमति भारत के सुरक्षा बुनियादी ढांचे को कैसे प्रभावित कर सकती है।
- **सुरक्षा अन्योन्याश्रयता:** सघन रूप से जुड़ी भारत-बांग्लादेश सीमा साझा सुरक्षा बाह्यताएँ पैदा करती है, जिससे पूर्वोत्तर को प्रभावित करने वाले अंतरराष्ट्रीय खतरों को रोकने के लिए सहयोग आवश्यक हो जाता है।

- **उदाहारण:** BSF-BGB महानिदेशक-स्तरीय वार्ता और समन्वित सीमा प्रबंधन योजना जैसे द्विपक्षीय तंत्र सीमा पार अपराध, तस्करी, सीमा उल्लंघन और सूचना साझाकरण का समाधान करते हैं।

भौगोलिक निकटता भारत-बांग्लादेश व्यापार की पूर्ण आर्थिक क्षमता में क्यों नहीं बदल पाई है?

- **सीमा लेनदेन लागत:** भौगोलिक निकटता अपना आर्थिक लाभ खो देती है जब भीड़भाड़ और अक्षम सीमा प्रक्रियाएं कम दूरी के व्यापार को महंगा और अप्रत्याशित बना देती हैं।
  - **उदाहारण:** पेट्रापोल-बेनापोल, भारत-बांग्लादेश व्यापार के लिए प्रमुख भूमि बंदरगाह, ने ऐतिहासिक रूप से कार्गो-निकासी और सीमा-पार करने में लगने वाले लंबे समय का अनुभव किया है, जिससे लॉजिस्टिक्स लागत में वृद्धि होती है।
- **नीति-प्रेरित बाधाएं:** टैरिफ, पैरा-टैरिफ और संवेदनशील-सूची प्रतिबंध बाजार पहुंच को सीमित करते हैं, भले ही भौतिक दूरी न्यूनतम हो।
  - **उदाहारण:** संतरा, अनानास, अदरक और हल्दी जैसे उत्पादों को बांग्लादेश के SAFTA संवेदनशील-सूची ढांचे के तहत प्रतिबंधों का सामना करना पड़ा है, जिसने बांग्लादेशी बाजार में अपनी भौगोलिक निकटता का लाभ उठाने की भारत के पूर्वोत्तर की क्षमता को प्रभावित किया है।
- **संकीर्ण व्यापार बास्केट:** द्विपक्षीय वाणिज्य वस्तुओं की अपेक्षाकृत सीमित शृंखला में केंद्रित रहता है, जो आमतौर पर दो पड़ोसी अर्थव्यवस्थाओं से अपेक्षित विविधीकरण को प्रतिबंधित करता है।
  - **उदाहारण:** अगस्त 2024-जनवरी 2025 की अवधि में, भारत के प्रमुख निर्यातों में खनिज ईंधन, कपास, वनस्पति कपड़ा फाइबर, सब्जियां और वाहन शामिल थे, जबकि भारत को बांग्लादेश का निर्यात मुख्य रूप से परिधान और कपड़ा उत्पादों में केंद्रित रहा।
- **कमजोर उत्पादन लिंकेज:** चूँकि द्विपक्षीय व्यापार तैयार और मध्यवर्ती वस्तुओं में केंद्रित रहता है, इसलिए पर्याप्त रूप से गहरे सीमा-पार उत्पादन नेटवर्क अभी तक उभर कर नहीं आए हैं।
  - **उदाहारण:** बांग्लादेश के कपड़ा उद्योग को भारतीय कपास, सूत, रसायन और मशीनरी के साथ अधिक निकटता से जोड़ा जा सकता है, जो मुख्य रूप से उत्पाद-आधारित वाणिज्य के बजाय बार-बार मध्यवर्ती-वस्तुओं का व्यापार उत्पन्न कर सकता है।
- **बुनियादी ढांचे के पीछे संस्थागत अंतराल:** भौतिक कनेक्टिविटी का विस्तार हुआ है, लेकिन सीमा शुल्क प्रणाली, सूचना प्रवाह और विनियामक समन्वय उसी गति से आगे नहीं बढ़े हैं।
  - **उदाहारण:** विश्व बैंक ने गैर-टैरिफ उपायों पर सीमित जानकारी और अपर्याप्त आधुनिक व्यापार-सुविधा प्रणालियों को गहरे भारत-बांग्लादेश और व्यापक दक्षिण एशियाई व्यापार पर बाधाओं के रूप में पहचाना है।
- **पूर्वोत्तर मूल्य-श्रृंखला का अपवर्जन:** बांग्लादेश से निकटता के बावजूद, पूर्वोत्तर को सीमा-पार कृषि और विनिर्माण मूल्य शृंखलाओं में पर्याप्त रूप से एकीकृत नहीं किया गया है।

- **उदाहारण:** पूर्वोत्तर से फल, मसाले और अन्य कृषि उत्पादों के बांग्लादेश में पहचान योग्य बाजार अवसर हैं, लेकिन सीमा प्रतिबंध और कमजोर लॉजिस्टिक्स इन क्षेत्रों को निकटता के लाभ का पूरी तरह से दोहन करने से रोकते हैं।

आगे की राह

- **पूर्वी मल्टीमॉडल कॉरिडोर का निर्माण करना:** पूर्वोत्तर को बांग्लादेश और बंगाल की खाड़ी से जोड़ने वाले एक निर्बाध कॉरिडोर में मौजूदा सड़क, रेल, जलमार्ग और बंदरगाह के बुनियादी ढांचे को एकीकृत करना।
  - **उदाहारण:** अनुमानित मल्टीमॉडल कार्गो मार्ग बनाने के लिए अखौरा-अगरतला रेल लिंक, खुलना-मोंगला रेल लाइन और अंतर्देशीय जलमार्ग नेटवर्क का निर्माण करना।
- **सीमा दंड (Border Penalty) कम करना:** द्विपक्षीय आर्थिक एकीकरण में सीमा शुल्क दक्षता और व्यापार सुविधा को भौतिक बुनियादी ढांचे जितना ही महत्वपूर्ण बनाना।
  - **उदाहारण:** पेट्रापोल-बेनापोल और अन्य प्रमुख भूमि बंदरगाहों पर सिंगल-विंडो क्लीयरेंस, इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेज़ीकरण, जोखिम-आधारित निरीक्षण और समन्वित सीमा प्रक्रियाओं का परिचय देना।
- **क्षेत्रीय मूल्य शृंखलाओं का निर्माण करना:** कमोडिटी व्यापार से आगे बढ़कर पूरक उत्पादन नेटवर्क की ओर बढ़ना जो निरंतर दो-तरफा वाणिज्य उत्पन्न करते हैं।
  - **उदाहारण:** भारतीय कपास, धागे, रसायन और मशीनरी को बांग्लादेश के कपड़ा उद्योग से जोड़ें, जबकि पूर्वोत्तर के कृषि-प्रसंस्करण को बांग्लादेशी वितरण नेटवर्क के साथ एकीकृत करना।
- **पूर्वोत्तर को व्यापार नेटवर्क में एकीकृत करना:** सुनिश्चित करना कि बांग्लादेश-आधारित कनेक्टिविटी पूर्वोत्तर को केवल एक पारगमन क्षेत्र बनाने के बजाय उसके भीतर उत्पादन और रोजगार उत्पन्न करे।
  - **उदाहारण:** बड़े क्षेत्रीय बाजारों तक पहुंचने के लिए बांग्लादेश के परिवहन नेटवर्क का उपयोग करते हुए त्रिपुरा, असम, मेघालय और मिजोरम के आसपास कृषि-प्रसंस्करण, कोल्ड-चेन और लॉजिस्टिक्स क्लस्टर विकसित करना।
- **आर्थिक अन्योन्याश्रयता को गहरा करना:** उन क्षेत्रों का विस्तार करना जहां सहयोग व्यापारिक माल (merchandise trade) के अलावा स्थायी पारस्परिक आर्थिक हित पैदा करता है।
  - **उदाहारण:** ऊर्जा, लॉजिस्टिक्स और अन्य पूरक क्षेत्रों में सहयोग का विस्तार करने के लिए सीमा-पार बिजली व्यापार और 1,320 मेगावाट की मैत्री सुपर थर्मल पावर परियोजना का निर्माण करना।
- **रणनीतिक अतिरेक (Strategic Redundancy) बनाए रखना:** पूर्वोत्तर के लिए वैकल्पिक कनेक्टिविटी मार्गों को संरक्षित करते हुए बांग्लादेश का एक प्रमुख पूर्वी गेटवे के रूप में उपयोग करना।
  - **उदाहारण:** बंगाल की खाड़ी समुद्री कनेक्टिविटी के साथ-साथ सिलीगुड़ी कॉरिडोर और पूर्वोत्तर रेल नेटवर्क जैसे विशिष्ट वैकल्पिक बुनियादी ढांचे को मजबूत करना, ताकि बांग्लादेश-आधारित पारगमन सिंगल-पॉइंट निर्भरता के बजाय एक लाभ बना रहे।

- **राजनीतिक विश्वास को संस्थागत रूप देना:** निरंतर संस्थागत जुड़ाव के माध्यम से दीर्घकालिक कनेक्टिविटी और आर्थिक सहयोग को द्विपक्षीय घर्षण से बचाना।
    - **उदाहारण:** स्थानीय आर्थिक अन्योन्याश्रयता और लोगों-से-लोगों के संपर्क को मजबूत करने के लिए सीमा हाट का विस्तार करते हुए ट्रांसबाउंडरी नदियों, सीमा प्रबंधन, व्यापार और सुरक्षा पर मौजूदा तंत्र का उपयोग करना।